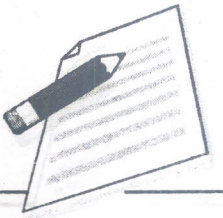

22

समाज और वातावरण

पर्यावरण को भूमि, जल, वायु, वनस्पति तथा प्राणि जगत, जो हमारे आस-पास विद्यमान है, के प्राकृतिक जगत के रूप में वर्णित किया जा सकता है। शब्दकोश में पर्यावरण का अर्थ है- परिवेश (आस-पास) वह वाह्य दशा जो मनुष्यों, जन्तुओं या वनस्पतियों के रहन-सहन या काम-काज की दशा के विकास अथवा वृद्धि को प्रभावित करती है। आरंभ में पूर्वकालीन मानवों के पर्यावरण में, केवल पृथ्वी के भौतिक पहलू (भूमि, हवा, जल) तथा जैव-समुदाय (पेड़ पौधे तथा प्राणि-जगत, जिसमें मनुष्य भी शामिल है, उनके कार्य, संगठन तथा संस्था) शामिल थे। लेकिन समय एवं समाज के विकास के साथ, मानव ने अपने पर्यावरण का दायरा सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक कार्यों के द्वारा बढ़ाया। अत: पर्यावरण का संबंध उस कुल दशा से है जो किसी निश्चित समय पर मनुष्य के आस-पास रहती है।

इस पाठ में हम पर्यावरण के संबंध में जानेंगे। पर्यावरण जिसे पहले भूगोल के अंतर्गत केन्द्रित कर अध्ययन किया गया, इसकी उपेक्षा की गई और महत्वहीन समझा गया था आजकल भूगोल तथा अन्य विषयों में ही सीमित नहीं है। बल्कि इसने जन-साधारण का भी ध्यान आकृष्ट किया है।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के बाद आप इस योग्य होगें कि:

- पर्यावरण के अर्थ की व्याख्या कर सकें,
- मनुष्य एवं पर्यावरण के बीच संबंध की व्याख्या कर सकें,
- जीव मंडल तथा सामाजिक जगत की व्याख्या कर सकें, तथा
- मानव समाज पर पर्यावरण के प्रभाव की व्याख्या कर सकें।

22.1 पर्यावरण का अर्थ

पर्यावरण को विभिन्न व्यक्तियों द्वारा तथा विषयों के अनुसार भिन्न रूपों एवं दृष्टिकोणों से देखा गया है। यह बात निश्चित रूप से कही जाती है कि पर्यावरण एक संपूर्ण इकाई है जिसका गठन भौतिक, जैविक तथा सांस्कृतिक घटकों की अन्योन्य क्रियाओं द्वारा होता है तथा ये अनेक रूपों में, व्यक्तिगत रूप से अथवा सामूहिक रूप से आपस में जुड़े रहते है।

भौतिक घटक (आकाश, भू संरचना, जल स्त्रोत, जलवायु, मिट्टी, चट्टान एवं खनिज) मानव वास के परिवर्तनशील स्वरूप, इसके अवसरों के साथ-साथ इसकी सीमाओं का भी निर्धारण करते हैं। जैविक घटक (पेड़ पौधे, जीव जन्तु, सूक्ष्म जीव, तथा मानव) जैव-मंडल की संरचना करते है। सांस्कृतिक घटक (आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक) मौलिक रूप से मानव-निर्मित लक्षण है, जो सांस्कृतिक वातावरण का निर्माण करते हैं।

'पर्यावरण' शब्द अंग्रेजी शब्द environment का हिन्दी रूपान्तरण है। इसकी उत्पति फ्रेंच शब्द 'इनवायरन' से हुई है जिसका अर्थ 'परिवेश' या 'आस-पास' अथवा 'चारों ओर' है।

22.2 पर्यावरण के प्रकार

पर्यावरण भौतिक तथा जैविक अवधारणा है जिसमें पृथ्वी के दोनों संघटक सजीव तथा निर्जीव शामिल होते हैं। अत: मूलभूत संरचना के आधार पर, पर्यावरण को दो मुख्य भागों में विभाजित किया जा सकता है:

1) भौतिक अथवा निर्जीव वातावरण (पर्यावरण)

2) जैविक अथवा सजीव वातावरण

भौतिक लक्षण तथा अवस्था के अनुसार, निर्जीव अथवा भौतिक वातावरण को पुन: तीन वर्गों में उपविभाजित किया जाता है।

1. स्थल मंडल (पृथ्वी)
2. जल मंडल (जल स्त्रोत) तथा
3. वायुमंडल (गैस)

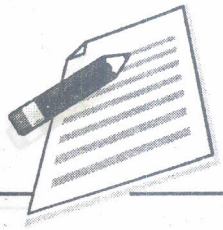

पर्यावरण के सजीव संघटकों में, पेड़, पौधे (वनस्पति) तथा जीव जंतु (प्राणि जगत) जिसमें मनुष्य जो एक महत्वपूर्ण घटक है तथा सूक्ष्म जीवों, को भी शामिल किया जाता है।

22.3 मानव तथा पर्यावरण के संबंध

मानव तथा पर्यावरण के बीच के संबंधों को अध्ययन ने सदैव सबका ध्यान आकर्षित किया है। मानव तथा पर्यावरण के बीच के संबंध ने मानव समाज के विकास को अत्यंत प्रभावित किया है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि सभी जीवों में, मनुष्य सबसे कुशल तथा सभ्य है। अत: यहाँ मनुष्य के निम्नलिखित तीन पहलुओं का उल्लेख करना सार्थक होगा:

1. भौतिक मानव जैविक समुदाय का अंग होता है तथा इसी प्रकार इसे अन्य जैविक जनसमुदाय की तरह ही भौतिक पर्यावरण के मूलभूत तत्वों जैसे-हवा, पानी भोजन तथा आवास आदि की आवश्यकता होती है तथा यह अपशिष्टों को परिस्थितिकी तंत्र में विसर्जित करता है।

2. सामाजिक मानव सामाजिक संस्थाओं की स्थापना करता है, सामाजिक संगठनों की संरचना करता है तथा अपने अस्तित्व, हित एवं कल्याण की रक्षा के लिए कानून तथा नीतियाँ बनाता है।

3. आर्थिक मानव भौतिक तथा जैविक वातावरण से संसाधनों को कौशल तथा तकनीकी के द्वारा, उत्पन्न करता है तथा इसका उपयोग करता है। प्रागैतिहासिक काल से आधुनिक काल तक मानव तथा पर्यावरण के बीच बदलते संबंधों को निम्नलिखित चार कालखंडों में विभाजित किया जा सकता है:

1. शिकारी तथा भोजन संग्राहक
2. पशु पालन तथा ग्राम्य जीवन
3. बागवानी तथा खेतीबाड़ी (कृषि)
4. विज्ञान, तकनीकी तथा उद्योगीकरण

1. **शिकारी तथा भोजन संग्राहक काल:** यह अवधि घोर आदिम मानव से संबंधित है जब वह मुख्य रूप से प्राकृतिक पर्यावरण का एक हिस्सा था तथा कार्यात्मक रूप से वह एक 'जैविक मानव' या 'या 'भौतिक मानव' था क्योंकि उसकी मूलभूत आवश्यकताएँ भोजन तथा आवास तक ही सीमित थी। मानव तथा पर्यावरण के बीच अत्यंत मैत्रीपूर्ण संबंध था। मनुष्य खानाबदोश (भ्रमणशील) का जीवन व्यतीत कर रहा था। उसके बाद के चरण में उसने शिकार करना

सीखा। 'आग' की खोज, जो एक संयोगात्मक खाज थी, ने मनुष्यों को जानवरों के माँस को खाने से पहले आग पर पकाना सिखाया। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि आग की खोज तथा साथ ही औजारों तथा शस्त्रों (हथियारों) की खोज ने मनुष्य को इस योग्य बना दिया कि वह प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग अपने हित में कर सके। कुछ लोग यह भी निष्कर्ष निकालते है कि 'आग, वह सर्वप्रथम पारिस्थितिकीय साधन था जिसका उपयोग मनुष्य ने पर्यावरण को अपने हित में उपयोग करने के लिए किया।

2. **पशुपालन तथा ग्राम्य जीवन काल:** समय के साथ आदिम मानव ने अपने लाभ के लिए पशु-पालन करना सीखा। प्रारंभ में, उसने संभवत: दूध देने वाले गाय-बैल तथा जानवरों को, माँस प्राप्ति के लिए पालतू बनाया होगा तथा धीरे-धीरे पालतू जानवरों की संख्या (झुंड) बढ़ी होगी। पूर्व के मानवों में पशु पालन द्वारा ही समूह अथवा समुदाय की उत्पति हुई होगी जिससे मानव अपनी तथा पशुधन की जंगली जानवरों से रक्षा कर सके। परंतु अभी भी वह खानाबदोश जीवन ही व्यतीत कर रहे थे, क्योंकि उन्हें स्वयं के लिए पानी, भोजन तथा पशुओं के लिए चारा अदि के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान तक विचरण करना पड़ता था।

3. **बागवानी तथा कृषि काल:** भोजन के लिए बागस्थिति बागवानी आरंभ करने की व्यवस्था ने, मानव के पशु पालन कौशल तथा प्राकृतिक पर्यावरण तंत्र के जैव घटकों के नियंत्रण करने की क्षमता को एक प्रामाणिकता दी। बागवानी तथा पेड़ पौधे लगाने के साथ ही पुरातन कृषि प्रणाली प्रारंभ हुई तथा खानाबदोश (भ्रमणशील) मानवों ने स्थायी व्यवस्थित जीवन प्रारंभ किया। खाद्य-फसलों की खेती के फलस्वरूप सामाजिक समूह तथा संगठनों की रचना हुई। अब मानवों ने जल एवं उपजाऊ भूमि की उपलब्धता के कारण नदी घाटियों में स्थायी रूप से रहना आरंभ किया, जिसे 'नदी घाटी सभ्यता' कहा जाता है। यहीं से मानव द्वारा अपने आस-पास के प्राकृतिक वातावरण के संसाधनों को उन्नत खेती द्वारा परिवर्तित करना आरंभ हुआ जिसके फलस्वरूप मानव आबादी में धीरे-धीरे वृद्धि शुरू हुई। इसके परिणामस्वरूप ज्यादा से ज्यादा कृषि योग्य भूमि प्राप्त करने के लिए जंगलों की कटाई होने लगी। समय के साथ मनुष्यों ने गृह-निर्माण कर, नगरों तथा शहरों की स्थापना कर तथा सड़क तथा पुल बनाकर अपने स्वयं के सांस्कृतिक वातावरण की रचना की।

4. **विज्ञान, तकनीकी तथा उद्योगीकरण काल:** उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में औद्योगिक क्रांति के विकास तथा विज्ञान के प्रादुर्भाव और परिष्कृत तकनीकी के विकास के परिणामस्वरूप मानव एवं उसके प्राकृतिक वातावरण के बीच मैत्री संबंधों में कटुता बढ़ी। प्राकृतिक पर्यावरण पर आधुनिक तकनीक का प्रभाव अत्यंत जटिल एवं विवादास्पद है। अत्यंत उन्नत प्रौद्योगिकी तथा वैज्ञानिक

तकनीकों के कारण प्राकृतिक वातावरण का असंतुलित दोहन आरंभ हो गया, जिसके कारण अधिकांशत: पर्यावरण की वे समस्याएँ उत्पन्न हुई है, जो इन दिनों दिखाई पड़ती है।

आदिमानव काल से लेकर आज तक मानव ने प्रकृति की उपासना विभिन्न रूपों में की है (पेड़, पौधे, जानवर, नदियाँ, पर्वत आदि)। प्राकृतिक उपासना अनेक समुदायों में अत्यंत पवित्र मानी जाती है। अनेक ऐसे समुदाय हैं जिनमें प्रकृति के प्रति असीम आदर है। भारत में राजस्थान के 'बिश्नोई' ऐसे ही समुदायों में एक है। भारतीय परंपरा में, प्रकृति एवं मनुष्य, जीवन-संभरण तंत्र के अभिन्न भाग हैं। हवा, पानी, भूमि, वनस्पति तथा प्राणि-समूह ये पाँचों परस्पर संबद्ध संबंधित तथा अन्योन्याश्रित हैं।

पाठगत प्रश्न 22.1

कोष्ठक में दिए गए शब्दों में खाली स्थानों को भरें

1. 'पर्यावरण' शब्द लिया है ..... शब्द से (लैटिन, अंग्रेजी, फ्रेंच)
2. पर्यावरण को .....भागों में विभाजित किया जा सकता है। (2,4,6,7)
3. जैविक घटक में शामिल है..... (सजीव, निर्जीव दोनों घटक)
4. मानव तथा पर्यावरण के बीच के संबंध को .....चरणों में विभाजित किया गया है। (2,6,8,4,5)

22.4 जीवमंडल तथा सामाजिक–मंडल

जीवमंडल एक जीवन संभरण पर्त है जो पृथ्वी को घेरे रहती है। इसी के द्वारा बिना किसी रक्षात्मक उपाय के पृथ्वी पर वनस्पति तथा जीव जन्तुओं का जीवन संभव हो पाता है। इसमें सभी जीवित सजीव घटक उर्जा घटक तथा निर्जीव घटक शामिल होते हैं। जीवित प्राणियों तथा भौतिक वातावरण के मध्य तथा जीवित प्राणियों के बीच भी सदैव आपस में अन्त:क्रिया होती रहती है। जीव मंडल की औसतन गहराई 30 कि. मी. होती है, जिसमें जल, मिट्टी तथा चट्टान शामिल होते हैं। जीवमंडल की ऊपरी सीमा ऑक्सीजन, आर्द्रता, तापमान, की उपलब्धता तथा ऊँचाई के साथ वायु-दाब के कम होने से आंकी जा सकती है। क्योंकि, इसी से जीवमंडल की परिसीमा निर्धारित होती है। जीवमंडल की निचली सीमा हवा तथा प्रकाश की उपलब्धता से निर्धारित की

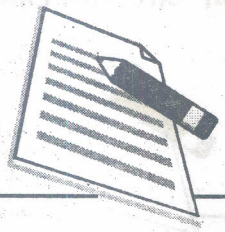

Notes

जाती है जो जीवन को संभव बनाते हैं। अत: जीव मंडल की गहराई, भूमि पर किसी वृक्ष की जमीन के नीचे सबसे गहरी जड़ तक है या उस गहराई तक है जहाँ तक बिल वासी जंतु रहते हैं अथवा उस गहराई तक है जहाँ पर उदगम (मूल) आधार शेल (चट्टाने) हैं। जीव मंडल का प्रसार सागर में नीचे काफी गहराई तक है।

जीवन का अस्तित्व महासागर में तथा गहरे समुद्र की सतह पर 9000 मी. की गहराई तक देखा गया है।

22.4.1 सामाजिक मंडल

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जिसमें समूह के साथ रहने की नैसर्गिक प्रवृत्ति रहती है। चूँकि मनुष्य सबसे अधिक अभिव्यक्तशील है अत: उसका आचरण अन्य मनुष्यों से संबंध रखता है। इसी प्रकार मनुष्य का जीवन के प्रति रवैया तथा मूल्य-प्रणाली का निर्धारण उस समूह के आकार एवं गुण के अनुसार होता है जिससे वह संबद्ध रहता है।

किसी निश्चित क्षेत्र में साथ में रहने वाले व्यक्ति के समूह एक समुदाय का निर्माण करते हैं। यह जातियों की एक संरचना होती है।

अत: समुदाय पारिस्थितिकी- तंत्र के जैव घटकों द्वारा निर्मित होते हैं। समय के साथ, प्रत्येक समुदाय की प्रजातियों ने अपने लिए एक विशेष स्थान बनाया है। समुदाय स्थैतिक नहीं होता है बल्कि गतिशील होता है तथा समय एवं स्थान के अनुसार परिवर्तित होता रहता है। किसी समुदाय की अपनी रचना, बनावट तथा प्रगतिशील इतिहास होता है। पर्यावरण तथा समाज परस्पर संबंधित तथा अन्योन्याश्रित होते हैं। विभिन्न सामाजिक समूहों तथा सामाजिक संरचनाओं जैसे औद्योगिक, कृषि, राजनैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा सौंदर्य शास्त्र इत्यादि की उत्पत्ति तथा विकास मानव सभ्यता के विकास के दौरान विभिन्न चरणों में हुआ है तथा ये सामाजिक संरचनाएं मानव के संग्रहित सांस्कृतिक संसाधनों के परिचायक हैं, जो मूल रूप से प्राकृतिक वातावरण पर आधारित हैं। पर्यावरण में समय के साथ निरंतर परिवर्तन होता रहा है जिसका कारण है:

1. जलवायु तथा भू-आकृति में परिवर्तन तथा
2. समुदाय के अन्दर प्रजातियों की गतिविधि

इन प्रभावों के कारण विद्यमान समुदायों के प्रभुत्व में विशिष्ट परिवर्तन हुआ है। मानव व्यवहार भौगोलिक वातावरण के अनुसार, अपनी विशिष्टता, सामाजिक संगठन,

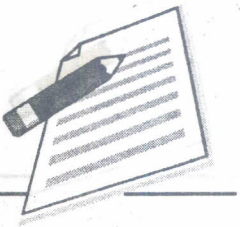

सामाजिक प्रक्रियाओं, आर्थिक व्यवस्था एवं संस्कृति के द्वारा जाना जाता है। जनसंख्या का घनत्व एवं वितरण, सामाजिक विभेद, सांस्कृतिक असमानता, आर्थिक राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक संगठनों की विशेषताएँ एवं सभी सामाजिक घटनाएं सामाजिक मंडल के निर्माण में योगदान करती हैं।

पाठगत प्रश्न 22.2

सही (✓) गलत (×) निशान लगाएं

1 जीवमंडल एक जीवन संभरण स्तर है जो पृथ्वी को घेरे रहता है। (सही/गलत)

2. जीवमंडल की औसतन मोटाई 50 किमी है (सही/गलत)

3. जीवमंडल में भौमिक एवं जलीय जैव-प्रणालियाँ शामिल हैं। (सही/गलत)

4. व्यक्तियों का वह समूह जो किसी निश्चित क्षेत्र में साथ-साथ रहता है, समुदाय का निर्माण करता है। (सही/गलत)

5. पर्यावरण संतुलनावस्था में तथा गतिशील है (सही/गलत)

22.5 मानव समाज पर पर्यावरण का प्रभाव

कुछ समय से मानव समाज पर पर्यावरण का प्रभाव अत्यंत चुनौतिपूर्वक प्रकट हो रहा है। विकास को काफी समय से प्राकृतिक संसाधनों के अल्प उपयोग से जोड़ा जाता था। इस बात पर कम ध्यान दिया गया कि अपूर्ण दोहन की मनोग्रस्तता का परिणाम अत्यधिक दोहन से हो सकता है। हमने ऐसा समझ लिया था कि प्राकृतिक संसाधन असीम मात्रा में है। पर्यावरण प्रक्रिया में वह सभी भौतिक प्रक्रियाएं शामिल है जो पृथ्वी की सतह पर वाह्य तथा आंतरिक दोनों रूपो में क्रियान्वित होती हैं। यद्यपि, मानव ने प्राकृतिक प्रक्रियाओं के साथ हस्तक्षेप या छेड़छाड़ अभ्रमणशील जीवन के आरंभ होते ही शुरू कर दी थी परंतु इसकी अत्यधिक रफ्तार औद्योगिक क्रांति के बाद प्रारंभ हुई।

आधुनिक तकनीकी का पर्यावरण पर प्रभाव अनेक रूपों में होता है तथा अत्यंत जटिल होता है, क्योंकि, हमारी प्राकृतिक अवस्था एवं प्रक्रिया के परिवर्तन एवं रूपान्तरण से पर्यावरण के जैव एवं अजैव घटकों में परिवर्तन की क्रमबद्ध प्रक्रिया होती है।

हम यह देखते हैं कि आधुनिक तकनीकी एवं उन्नतिशील विज्ञान के ज्ञान से सुसज्जित मानव पर्यावरण प्रक्रिया को बदलने का एक महत्वपूर्ण कारक हो गया है। इस बात को भी पूर्ण रूप से समझना होगा कि प्रकृति के किसी भी एक अवयव (जैसे- वायु, जल, भूमि, वनस्पति तथा प्राणि) की बाधा से प्रकृति में असंतुलन की संभावना बढ़ जाती है। प्राकृतिक प्रक्रियाएँ अथवा मानवीय घटक कभी-कभी प्राकृतिक वातावरण को बिगाड़ देते हैं जो मानव समाज के लिए आपदा का कारण (यथा-भूकंप, ज्वालामुखी, बाढ़, चक्रवात) बन जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप जान-माल का काफी नुकसान होता है। पर्यावरण संकट मनुष्य के स्वास्थ्य को निम्नलिखित रूप से प्रभावित करता है:-

1. वायु-प्रदूषण श्वसन संबंधी बीमारियों का कारण होता है।
2. जल-प्रदूषण से आन्त्र संबंधी रोग होते हैं।
3. कूड़ा-कचरा प्रदूषण रोगवाहक होते हैं तथा बीमारी का कारण होते है।
4. विषाक्त अपशिष्ट कैंसर तथा तंत्रिका संबंधी बीमारियों का कारण होते हैं।

चित्र : जल-प्रदूषण से पर्यावरण को खतरा होता है तथा आन्त्र संबंधी रोग होते हैं

इसलिए, शिक्षा के द्वारा पर्यावरण के प्रभावों के प्रति जागरूकता अवश्य जगाई जानी चाहिए, क्योंकि स्वच्छ पर्यावरण मानव समाज के लिए अमूल्य है।

पाठगत प्रश्न 22.3

सही (✓) गलत (×) पर निशान लगाएँ।

1. मानव ने पर्यावरण के साथ कभी छेड़-छाड़ नहीं की है। (सही/गलत)
2. समाज पर पर्यावरण का प्रभाव सदैव अनुकूल होता है। (सही/गलत)

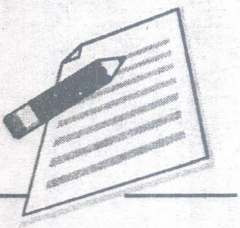

3. असामान्य घटनाएं मानव-समाज के लिए विनाशकारी नहीं हैं। (सही/गलत)

4. शिक्षा का आधार इतना व्यापक होना चाहिए कि वह पर्यावरण के प्रभावों के विषय में जागरूकता ला सके। (सही/गलत)

आपने क्या सीखा

- पर्यावरण का संबंध उन कुल दशाओं से है जो किसी निश्चित देश-काल में मनुष्य के इर्द-गिर्द रहती हैं।
- आरंभ में, मानव के पर्यावरण में सिर्फ पृथ्वी के भौतिक पहलू (भूमि, हवा, जल) तथा जैव समुदाय (पेड़ पौधे) तथा प्राणि जगत ही शामिल थे।
- फिर भी समय के साथ एवं समाज के विकास के द्वारा मानव ने अपने पर्यावरण का दायरा सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक कार्यों के द्वारा बढ़ाया।
- पर्यावरण, भौतिक तथा जैविक अवधारणा है जिसमें पृथ्वी के जैव एवं अजैव दोनो संघटक शामिल होते हैं।
- इस संरचना के आधार पर पर्यावरण को दो भागों में बाटा जाता है (1) भौतिक अथवा निर्जीव पर्यावरण (2) जैविक अथवा सजीव पर्यावरण
- समय के साथ मानव तथा पर्यावरण का संबंध बदला है। पर्यावरण के संबंध में (1) भौतिक (2) सामाजिक (3) आर्थिक इन तीन पहलूओं की भूमिका गौर करने लायक है।
- प्रागैतिहासिक युग से आधुनिक युग तक पर्यावरण के साथ मानव के बदलते संबंधों को चार चरणों में विभाजित किया जा सकता है:-

  (i) शिकारी तथा भोजन संग्राहक
  (ii) पशुपालन तथा ग्राम्य जीवन
  (iii) बागवानी तथा खेती बाड़ी
  (iv) विज्ञान, तकनीकी तथा उद्योगीकरण
- जीवमंडल एक जीवन-संभरण स्तर है जो पृथ्वी को घेरे रहता है। इसी के द्वारा बिना किसी रक्षात्मक उपाय के पृथ्वी पर वनस्पति तथा जीव जंतुओं का जीवन संभव हो पाता है। सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक तत्व मिलकर सामाजिक मंडल का निर्माण करते हैं।
- पर्यावरण परिवर्तन प्रक्रिया का एक सक्रिय कारक होने के कारण, मानव प्राकृतिक संसाधनों के शोषण के द्वारा पारिस्थितिकी तंत्र को परिवर्तित करता रहता है।

शब्दावली

(i) पर्यावरण-वाह्य दशा का वह आवरण जो मानव, जीव-जंतु अथवा वनस्पति के विकास एवं जीवन तथा कार्य करने की स्थिति को प्रभावित करता है।

(ii) जैव- पृथ्वी के जीवित अथवा सजीव तत्व

(iii) अजैव- पृथ्वी के निर्जिव तत्व

(iv) स्थल मंडल- पृथ्वी की अपेक्षाकृत ठोस परत या पृथ्वी की ऊपरी परत

(v) वायुमंडल- पृथ्वी पर आच्छादित गैसीय आवरण

(vi) वनस्पति- किसी निश्चित क्षेत्र में उस समयावधि पर सभी पेड़-पौधे

(vii) प्राणि जगत- किसी निश्चित क्षेत्र में, उस समयावधि में सभी जीव जंतु

(viii) पशु पालन- पशुओं को पालना

(ix) स्थलचर- भूमि (पृथ्वी) पर रहने वाले जीव जन्तु

(x) जलचर- जल में बढ़ने, रहने तथा पाए जाने वाले

(xi) पारिस्थितिकी तंत्र- पर्यावरण एवं प्रतिवेश (आस-पास) का संबंध

(xii) बायोम- किसी निश्चित प्रकार के सभी पेड़ पौधे तथा जंतुओं का समूह

(xiii) प्रजाति- जन्तुओं, पेड़ पौधों तथा मनुष्यों अथवा जीवों का समूह जो समान लक्षण (गुण) रखते हैं तथा जिनके जीने में है।

(xiv) रोगवाहक- संक्रामक रोग फैलाने वाले

पाठांत अभ्यास

100-250 शब्दों में उत्तर दीजिए।

(I) पर्यावरण क्या है? (100 शब्द)।

(II) मानव एवं पर्यावरण के बीच के संबंध के विभिन्न चरणों की व्याख्या कीजिए।

(III) जीवमंडल क्या है? जीवमंडल की दो उप प्रणालियों को बताइए।

(IV) सामाजिक मंडल क्या है? (100 शब्द)

(V) मानव समाज पर पर्यावरण के प्रभाव का वर्णन कीजिए। (100 शब्द)

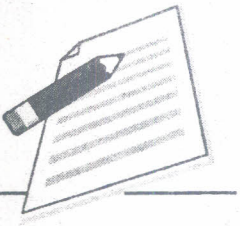

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

22.1

1. फ्रेंच
2. 2
3. अजैव
4. जैव
5. 4

22.2

1. सत्य
2. असत्य
3. सत्य
4. सत्य
5. असत्य

22.3

1. असत्य
2. असत्य
3. असत्य
4. सत्य